तुलसीदास

रामचरितमानस (लंकाकाण्ड से)

पूरब दिसा बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक ।
कहत सबहि देखहु ससिहि मृगपति सरिस असंक ॥

पूरब दिसि गिरि गुहा निवासी । परम प्रताप तेज बल रासी ॥
मत्त नाग तम कुंभ बिदारी । ससि केसरि गगन बन चारी ॥

बिथुरे नभ मुकुताहल तारा । निसि सुंदरी केर सिंगारा ॥
कह प्रभु ससि महुँ मेचकताई । कहहु काह निज निज मति भाई ॥

कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । ससि महुँ प्रगट भूमि कै झाँई ॥
मारेउ राहु ससिहि कह कोई । उर महँ परी स्यामता सोई ॥

कोउ कह जब बिधि रतिमुख कीन्हा । सार भाग ससि कर हरि लीन्हा ॥
छिद्र सो प्रगट इंदु उर माहीं । तेहि मग देखिअ नभ परिछाहीं ॥

प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा । अति प्रय निज उर दीन्ह बसेरा ।
बिष संजुत कर निकर पसारी । जारत बिरहवंत नर नारी ॥

कह हनुमंत सुनहु प्रभ ससि तुम्हार प्रय दास ।
तव मूरति बिधु उर बसति सोइ स्यामता अभास ॥ १२ (क) ॥

Readers may be surprised to see Tulsidas, whose रामचरितमानस bears the date 1574, in such modern company as our other poets; but the poets themselves won't be, and neither would Tulsi. Here, Rama asks his comrades to explain the true nature of the dark patch on the moon. The novel vowel signs seen in मारेउ, कोउ, and तेहि indicate long syllables that have to be read as short for metre thus: *mārĕu kŏu, tĕhi.*